Vol 7 Issue 1 Oct. 2017

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Awadhesh Kumar Shirotriya

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

Address:-Ashok Yakkaldevi 258/34, Raviwar Peth, Solapur - 413 005 Maharashtra, India
Cell : 9595 359 435, Ph No: 02172372010 Email: ayisrj@yahoo.in Website: www.oldror.lbp.world

REVIEW OF RESEARCH

ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2017

''महिला बालसाहित्यकारों की रचनाओं में समाज, संस्कृति और जीवन दर्शन''

Dr. Anita Patidar

सारांश

समाज और साहित्य में परस्पर घनिष्ठ संबंध होता है। साहित्य समाज का पथ–प्रदर्शक है। साहित्य के द्वारा ही देश की सभ्यता, संस्कृति का परिचय होता हैं। साहित्य के माध्यम से हम अपने समाज और संस्कृति पर गौरवान्वित होते है। साहित्य से ही जीवन दर्शन का ज्ञान होता है। साहित्यकार द्वारा रचित साहित्य का समाज से जो संबंध होता है, जो शरीर और आत्मा का है हम साहित्य को समाज से तथा समाज को साहित्य से अलग नहीं कर सकते है। दोनों एक दूसरे पर आश्रित होते है। साहित्य समाज एवं संस्कृति के प्रभाव से कभी अछूता नहीं रहता। साहित्य धर्म के बखेड़ों, ऊँच–नीच तथा जाति–पाँति के बँधनों को तोड़कर एक नये समाज का निर्माण करता हैं। वह प्राचीन मान्यता को हटाकर जीवन तथा समाज में नवनिर्माण करता है। साहित्य धर्म संस्कृति, रीति–रिवाज आदि पहलुओं में क्रांतिकारी परिवर्तन करता हैं साथ ही समाज में प्रेम, त्याग और बलिदान की प्रेरणा देता है। सर्वश्रेष्ठ साहित्य वह होता है, जिसमें सत्यम् शिवम् एवं सुन्दरम् का समावेश होता हैं। बच्चों के प्रकृति–प्रदत्त गुणों को मुखरित करना, उनके नैतिक गुणों को पहचानना और सँवारना, उन्हें सच्चे ईमानदार और उच्च आदर्शों के प्रति निष्ठावान नागरिक बनाना आज बालसाहित्य का कार्य है। महिला बाल साहित्यकारों के द्वारा रचित बालसाहित्य में भारतीय संस्कृति कूट–कूट कर भरी हुई है। इन्होंने धर्म, दर्शन, समाज, साहित्य, राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों का अपनी रचनाओं के माध्यम से बच्चों का परिचय करवाती हैं। युग का प्रतिबिम्ब इनकी रचनाओं में स्पष्ट झलकता है। अतः इनकी रचनाओं में ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' एवं लोकमंगल की भावना हैं इसीलिए साहित्य समाज का दर्पण होने के साथ–साथ युग का पथ–प्रदर्शक भी है।

Key Words – समाज, संस्कृति, बालसाहित्य, स्वास्थ, जीवन दर्शन, बाल कहानियाँ, परिवेश।

प्रस्तावना–

महिला बाल साहित्यकारों ने भारतीय दर्शन से ओतप्रोत साहित्य का सृजन कर बच्चों को उस सुखदलोक में ले जाती हैं, जहाँ नया बसंत है, फूल महकते हैं, भौंरे गुनगुनाते है, कोयल कूकती है, संगीत की मधुर रागिनी गूँजती है। और जहाँ झरनों की कलकल सुनाई देती है। इस प्रकार महिला बालसाहित्यकारों ने अपनी जादुई लेखनी से समाज में परिवर्तन के साथ बच्चों का भरपूर मनोरंजन कर नवजीवन का निर्माण किया हैं। वस्तुतः बच्चे आज के समाज की एक अनिवार्यता है–''आज समाज में जीवन मूल्यों का हनन हो रहा है, सामान्य जीवन में पतन और भ्रष्टाचार जैसी गहरी घुसपैठ होती जा रही है। आज समाज में जो वातावरण बच्चों को मिल रहा है, वहाँ नैतिक मूल्यों के स्थान पर भौतिक मूल्यों को महत्व दिया जा रहा है। इन सब से निजात पाना आज बहुत जरूरी है इसके लिए एक ही पहल हो सकती है वह है 'बालसाहित्य'–''बालक के लिए एक नई पृष्ठभूमि तैयार करना–क्योंकि आज का बालक ही कल का भावी नागरिक है।''[1]

बालक राष्ट्र के भावी कर्णधार है, उनके चरित्र निर्माण, बौद्धिक विकास एवं स्वस्थ मनोरंजन के लिए सामयिक सामाजिक, सांस्कृतिक आर्थिक व राष्ट्रीय चेतना का बोध कराने वाले बालसाहित्य का पठन अनिवार्य है। महिला बालसाहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से यह कोशिश की है कि बच्चों में भारतीय संस्कृति व सुसंस्कारों के साथ ही प्रगतिशील सोच विकसित हो, तथा बालसाहित्य के माध्यम से उनमें नयी चेतना जाग्रत हो। इसलिए समकालीन बाल साहित्य में समाज और यथार्थ जीवन का खुलासा होना चाहिए। आज जीवन मूल्य बदल रहे है। बच्चों को मानवीय मूल्यबोध को अहसास कराने वाले बालसाहित्य की जरूरत है। जिससे बच्चों की समस्याओं और मन की गुत्थियों को सुलझाने में सहायता मिलती है। आज आवश्यकता इस बात की है कि बच्चों को सही मार्ग दर्शन, सही प्रेरणा व सही परामर्श के साथ स्वस्थ पारिवारिक एवं सामाजिक वातावरण मिले। बच्चा वह गीली मिट्टी है जिस पर साहित्यकार मनचाहे खिलौने गढ़ सकता हैं। उसका पेशा बहुत जिम्मेदारी का होता है। वह अपनी कला के माध्यम से न सिर्फ स्वयं की भावनाओं का विरेचन करता है। जीवन में सौंदर्य–बोध की स्थापना करता है, बल्कि छोटी–छोटी खुशियाँ भी रचता है। ऐसे में याद आती हैं गलियों में एक फेरीवाला जो मिठाई बेचकर बच्चों का मनोरंजन करता है।

''यह फेरीवाला बाँस पर अपनी मिठाई बाँधे गली–गली घूमता था। जब बच्चे मिठाई खरीदने आते तो वह मिठाई का मोटा तार खींचकर उससे खिलौने बनाकर बच्चों को खाने को देता। बच्चे तरह–तरह की फरमाइश करते भैया, एक चश्मा बना दो या अँगूठी बना दो, लॉकेट बना दो, फूल बना दो बगैरह। बच्चे इस खिलौने को थोड़ी देर पहनते फिर खा जाते। मिठाई वाले की यह सृजनात्मकता बचपन में आह्लाद भर देती थी। यदि वह मीठा तार खींचकर वैसे

का वैसा खाने को थमा देता तो वह आनंद कहाँ से आता है।''[2]

महिला बाल साहित्यकारों की रचनाओं में स्पष्ट होता है कि बचपन बहुत ही सुखदायी होता है। बचपन एक ऐसी अवस्था है जिसमें बच्चा किसी भय या रोक–टोक के इधर– उधर घूमना, बिना चिन्ता के खेलना व खाता–पिता रहता है साथ ही वह खुश होकर बचपन जीता है। बचपन में कितना मतवालापन होता है। इन्हीं रचनाओं के साथ कवियित्रियों ने अपना जीवन जीने की कोशिश की है। डॉ. शकुन्तला कालरा ने बच्चों के व्यक्तित्व निर्माण में बाल साहित्य की अहम भूमिका होती है पर अपना विचार व्यक्त किया है–''साहित्य वह सरस साधन है, जिसके द्वारा बच्चों में स्वतः गुण अर्जित करने की उमंग पैदा की जा सकती है। साहित्य मन की कई गाँठे खोल देता है। आपकी उदासी, ऊब, निराशा, और कुंठा हर लेता हैं। एक अच्छी रचना कविता हो या कहानी आपको आनंद के उस संसार में ले जाती है, जहाँ प्रसन्नता ही प्रसन्नता है। ऐसा साहित्य बालकों की चिंतन शक्ति, ज्ञान–शक्ति कर्मशक्ति विकसित करता हैं। पुस्तक से ही आत्म शिक्षा और व्यक्तिगत आत्मिक जीवन आरंभ होता है।''[3]

'गर्द के नीचे' के माध्यम से आशा शैली ने हिमालय के उन संघर्षों को जो इन सेनानियों ने देश के लिए किए कार्यों को बच्चों के सामने प्रस्तुत किया हैं। आज अब इतिहास को खंगालते है तो ऐसे कई नाम सामने आते है जिन्होंने देश के प्रति अपने प्राण तक निछावर कर दिये है। जो बच्चों को नैतिक शिक्षा के साथ–साथ उनका मार्ग दर्शन भी करते है। ''आजाद हिन्द फौज के उद्घोष–जै–हिन्द'' के नारे ने उस समय के युवकों के दिलों–दिमाग पर गहरा असर डाला था। उनकी देश भक्ति तथा बहादुरी ने नौजवानों में नया जोश पैदा कर दिया था और जब देश द्रोही के मुकदमें को लड़ने के लिए भोलाभाई देसाई के साथ स्व. पंडित जवाहरलाल नेहरू ने वकालती चोला पहना तो बिलासपुर के विद्यार्थियों ने भी उनके समर्थन में कुछ करने की ठानी।''[4]

आशा शैली ने बच्चों को हिमालय की यात्रा के साथ–साथ युद्धस्थल को भी बड़ी सरलता से एक माला रूप में पिरोया है जिससे बच्चों को सुदृढ़ विकास में इनका योगदान महत्वपूर्ण सिद्ध हो। शैली ने इन महापुरुषों की कुरबानियों को प्रकाश में लाने का प्रयास बहुत ही महत्वपूर्ण है। इस पुस्तक के द्वारा लेखिका ने हिमालय की सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, साम्प्रदायिक और राजनैतिक सभी सच्चाईयों का अत्यन्त प्रभावशाली और प्रेरणादायी वर्णन किया हैं।

श्रीमती आशा जाकड़ का प्रस्तुत काव्य संकलन जिसमें बच्चों का सर्वांगीण विकास है। इसमें साम्प्रदायिक सद्भावना प्रकट हुई हैं। लेखिका ने अपनी मीठी वाणी से भारत की महानता का गुणगान कर विविधता में एकता की भावना जाग्रत की है। कवयित्री का मन वैसे भी संवेदनशील होता है। देश प्रेम के भावों से ओतप्रोत माँ भारती की वंदना, अमृत भर दे, हम कलके हिन्दुस्तानी चल–चलरे नौजवान आदि लोक प्रीयता के साथ पठनीय भी है। ''मानवता का उद्धार करें''

''आओं इस जीर्ण पुरातन, भारत का नव निर्माण करें।
युग–युग से पिसती आयी, मानवता का उद्धार करें।
देखों उन भूखे पेटों को, रोटी नहीं भरपेट जहाँ।
देखों उन ऊचे महलों को, श्वानों को मिलता दूध जहाँ।[5]

कवयित्री ने बच्चों को देशभक्ति की भावना जाग्रत कर उनमें करूणा, दया मानवता के रंग भी सर्वत्र बिखरे हुए हैं। जिससे बच्चों, किशोरों एवं नौजवानों को देश भक्ति की प्रेरणादायी शिक्षा दी गई हैं। कवयित्री का मूल उद्देश्य डूबती हुई मानवता के उद्धार की चिन्ता व्यक्त की है। इस छोटी सी कविता के माध्यम से कवयित्री बच्चों को देश, समाज व जीवन दर्शन प्रस्तुत कर कुछ करने के लिए प्रेरित करती हैं। (''अच्छे रास्ते जो स्वस्थ बनायेंगे'' भाग 1,2,)

आज के बच्चों को अच्छे स्वास्थ्य की बहुत आवश्यकता है क्योंकि बच्चे बाहर का खाना ही पसंद करते है। बच्चे जंक फूड़ ही खाते है। बच्चे ये नहीं समझते है कि स्वास्थ्य को अच्छा रखने के लिए किन–किन बातों का ध्यान रखना जरूरी होता हैं। अजिता श्रीवास्तव की पुस्तक ''अच्छे रास्ते जो स्वस्थ बनायेंगे'' भाग 1,2, के रूप में प्रस्तुत कर बच्चों व प्रौढ़ों दोनों को स्वास्थ्य संबंधी अर्चन और उपयोगी बातें बतलाई हैं। अच्छा स्वास्थ्य क्या है ? यह किस तरह प्राप्त होता है, उसे प्राप्त करने के लिए कौन–कौन से काम करने चाहिए–इन सभी बातों की सरल एवं साधारण जानकारी दी है। इनके विषय है–स्वास्थ्य क्या है, एक स्वस्थ मनुष्य की कहानी, उचित पोषक पदार्थ, कैसा और कितना भोजन, साफ पानी, साफ हवा, रोगों के टीके, शरीर के अंग और उनके नाम, अंगों की सफाई–त्वचा, वातावरण की सफाई, सार्वजनिक स्वास्थ्य सफाई के लिए अभिमान आदि है।

''संसार में जितने सुख है, उनमें स्वास्थ्य सबसे बड़ा सुख है। किसी ने कहा है–''तन्दुरूस्ती लाख नियामत है।'' अर्थात लाख अच्छी चीज़ों में तन्दुरूस्ती सबसे अच्छी चीज़ हैं।[6] ''हर एक आदमी भोजन करता है। भोजन पेट में जाकर पचता है। पचे हुए भोजन से ही रक्त बनता है'' आदमी पानी पीता है। पानी भोजन को पचाने में सहायता करता है।[7] 'शरीर के इन सभी अंगों की बनावट को ध्यान से देखों तो तुम्हें पता लगेगा कि वे सब अलग–अलग होते हुए भी आपस में एक–दूसरे से जुड़े हुए हैं। उनके आपस में जुड़ने और काम करने से ही हमारा शरीर उचित रूप से बना रहता है, हम सब स्वस्थ रहकर अपना काम करते रहते है। अंगों में यदि दुर्भाग्यवश कोई एक भी खराब हो जाये या उनमें से कोई एक भी काम करना बंद कर दे तो निश्चित रूप से हमारा शरीर उसी प्रकार बेकार हो जाएगा, जिस प्रकार इंजन का एक पुरज़ा खराब होने पर इंजन बेकार हो जाता है।[8]

स्वस्थ्य रहने के लिए बहुत आवश्यक है कि हमें गंदगी का सामना करना न पड़े और अधिक से अधिक शुद्ध हवा प्राप्त होती रहे।''[9]

श्री चित्रा गर्ग की 'ईमानदारी की कहानियाँ भाग 1,2,3, में प्रकाशित कहानियों में आपसी प्रेम, विश्वास, स्नेह और परम्परा का अद्भूत चित्रण किया गया हैं, इन रचनाओं में आस–पास घटित घटनाओं का वर्णन है। जिससे बच्चों को ईमानदारी की सीख मिलेगी। वेसे तो इन सभी कहानियों के द्वारा बच्चों का भरपूर मनोरंजन होगा। इनके विषय–पश्चाताप, सच्चा हीरा,

एक थी नेहा व दूध का दूध पानी का पानी आदि है। दूध का दूध पानी का पानी में शलभ को बच्चे कंजूस कहते है, क्योंकि वह कभी भी स्कूल में खर्च नहीं करता है। इससे वह परेशान होकर अपने ही घर में चोरी कर लेता है, तथा चोरी का आरोप नौकरों पर लगता है। जिससे शलभ घबराकर अंत में सब सच बताकर उन नौकरों को छुडवाता है। ''बेटे तुम्हें अपनी गलती का एहसास हो गया। यही उसका सबसे बड़ा प्रायश्चित है, गलती इंसान से ही होती है।''[10]

डॉ. मीनाक्षी स्वामी ने बालसाहित्य के अन्तर्गत प्रकृति पशु–पक्षी एवं बाल क्रीड़ाओं का सहज चित्रण किया है। इनकी भाषा बालकोचित्त सहज व सरल है। छोटे–छोटे विषयों को लेकर उन्होंने साहित्य रचना की है। इनकी लगभग 15 पुस्तकें प्रकाशित हैं जो विषय–योग एक जीवन शैली, पीतल का पतीला, बूंद–बूंद से सागर, लाला जी ने पकड़े कान, बीज का सफर, चौरंगी, पतंग, पाली का घोड़ा आदि है। इनमें पर्यावरण के अति महत्वपूर्ण आधार पशु–पक्षियों का महत्व दर्शाते हुए उनका हमारे जीवन में महत्वपूर्ण योगदान को समझाया गया हैं। मालती बसंत की 100 लघुकथाएँ जो आज की भागदौड़ भरी जिन्दगी के साथ ही समय की कमी के कारण ये कथाएँ बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। इन छोटी–छोटी कथाओं के माध्यम से बच्चों को अच्छे संस्कार, सच व झूठ में अंतर, सही राह का चयन तथा व्यक्तित्व विकास के मार्ग प्रशस्त किये जा सकते है। इस संग्रह की लघुकथाओं में रिश्ते, परिवार, समाज, जीवन दर्शन, कार्यक्षेत्र ही नहीं सरहद पार के मानवीय संस्कारों की रचनात्मक संवेदना के विभिन्न पहलुओं पर दृष्टि डाली गयी है। इनके विषय चन्द्रमा और लहरे, झरने, दो बत्ती वाला मकान, तोता रटंत, अदला–बदली, अपने–पराये, निर्णय, तलाक, चमचा, व्यापार, मेला,बुढ़ापे की दौलत, चिन्ता, समय का प्रश्न, अपने–पराये, जीवन का सत्य जीवन का सत्य, दर्द की दवा, प्रतीज्ञा, हमदर्द, तीन रंग, अपना महत्व, रिश्ते, दुश्मन, तलाश, तलाक, फांस, तारीफ, आशंका, समय की गति, परिवर्तन, प्रायश्चित, अन्तर, बदलते मूल्य आदि है। जिसमें समाज, संस्कृति और जीवन दर्शन कराया गया है। इस प्रकार झरना रचना में झरने का संघर्ष एवं पीड़ा को महसूस करते हुए उसे सार्थक अभिव्यक्ति प्रदान करने का सुन्दर चित्रण है। 'चन्द्रमा और लहरें' में चन्द्रमा को देखकर समुद्र की लहरें सोच रही थी कि चन्द्रमा हमको देखकर हंस रहा है लेकिन जब चन्द्रमा धीरे–धीरे ढ़लने लगता है यह देखकर लहरें व्याकुल हो जाती है तब एक लहर बोली– ''निराश मत हो, मेरी प्यारी लहरों। चन्द्रमा तो फिर लौटेगा, हम फिर प्रयास करेंगी और एक दिन चांद को अवश्य छू लेंगी। यह सुनकर सभी लहरें उल्लासित, उत्साहित हो उठीं और किनारे को अपना यह नया संकल्प बताने दौड़ चली।''[11] 'जीवन का सत्य' कहानी में गुरु अपने शिष्यों से पूछते है कि तुम सबसे अधिक प्रेम किससे करते हों, तो एक शिष्य ने कहा–''मैं आपसे प्रेम करता हूँ, दूसरे ने कहा–मैं अपने माता–पिता से प्रेम करता हूँ, तीसरे ने कहा–मैं अपने आप से प्रेम करता हूँ तो गुरु ने तीसरे शिष्य से कहाँ– ''यही जीवन का सत्य हैं, मनुष्य सबसे अधिक अपने आपसे ही प्रेम करता है और जो हमें प्रेम करता है; वही हमें सबसे अधिक प्यारा लगता है।''[12]

'समय की गति' कहानी में आदमी अपने आलस्य में घिर जाता है और वह समय से पिछड़ जाता है और समय आगे बढ़ जाता है। तब आदमी को अपनी गलती समझ में आती है। ''मैं नहीं रूक सकता। चलना मेरा धर्म है यदि तुम मेरे साथ चल सको तो चलो, मैं तुम्हें साथ दूँगा। निराश व्यक्ति के देखते–देखते वह राहगीर दूर जा चुका था, उसकी पीठ पर लिखा था ''समय''।[13] मालती बसंत की इन छोटी–छोटी कथाओं में जीवन के हर पहलुओं पर चर्चा की गयी हैं ताकि आज बच्चे इन्हें समझ कर अपने भावी जीवन की नींव मजबूत बना सके।

नीलम राकेश की बाल कहानियों का संकलन 'अनोखी छुट्टियाँ' बहुत ही मनोरंजक ढंग से प्रकाशित हुई है। जिनमें जीवन मूल्यों से जुड़ी अधिकतर पारिवारिक परिवेश प्रधान और मूल्य सापेक्ष है। यह 25 कहानियों का संकलन है जिसमें हर कहानी सहज सम्प्रेषणीय इतिवृतात्मकता, छोटे–छोटे वाक्य, एकहरे कथानक आदि का समावेश किया गया है। इन कहानियों के माध्यम से बच्चों को शिक्षा, अनुशासन, आचार, व्यवहार और उच्चादर्शों के प्रति संवेदना आदि सिखाने का प्रयास किया गया है। इनके विषय–अनोखी छुट्टियाँ, समय की कीमत, एकता का मंत्र, सपने का सच, जादुई अँगूठी, सच्चा मित्र, प्रेम की शक्ति, सजा, माँ की ममता, साक्षी, जैसी करनी वैसे भरनी, कौन बड़ा–कौन छोटा, आदि है। 'अनोखी छुट्टियाँ, कहानी में ग्राम सुधार और पर्यावरण चिन्ता जैसी संवेदना को जगाने के लिए छुट्टी जैसे माध्यम का प्रयोग किया है। गर्मी की छुट्टी में पिंकी–चिंकी पापा के साथ पहाड़ पर नहीं दादी के साथ गाँव पर जाकर छुट्टी बिताती हैं गाँव उन्हें बहुत अच्छा लगता है लेकिन वहाँ की गंदगी उन्हें खटकती है। वे वहाँ की बाल–मण्डली के साथ

जब गाँव में सफाई अभियान चलाते है तो उन्हें बहुत मजा आता है और इस बार की छुट्टी सही अर्थों में अनोखी हो जाती है। कहानी के अंत में एक वाक्य ''बिल्कुल अनोखी दादी माँ'', बिलकुल अनोखी।''

''तीनों के चेहरों पर तृप्ति की मुस्कान थी।''[14] इस तृप्ति से बच्चों को बहुत खुशी होती है इसी प्रकार 'घड़ी ने खोला राज' कहानी में ''मीनल प्रसन्न थी कि वह मानवता के लिए कुछ कर सकी।''[15] इस प्रकार के मूल्य सापेक्ष संवेदनात्मक संकेत कुछ कहानियों में मिलते है जैसे 'सुदेश की भूल' में 'हम जो दूसरों को देते हैं वही हमें वापस मिलता है।''[16] नीलम राकेश का कहानी संग्रह में बच्चों की रूचि, जीवन कला, शिक्षा, अनुशासन, आचार व्यवहार और उच्चादर्शों आदि का चित्रण कर बच्चों का ज्ञानवर्धन किया गया है।

डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ की 'दस प्रेरक बाल कहानियाँ' नामक पुस्तक में बच्चे विभिन्न विषयों की कथाएं पढ़कर जीवन मूल्य के महत्व को समझ सके क्योंकि इनमें जीवन मूल्य समाहित है वे बच्चों को जीवन में अपनाने के लिए प्रेरित और प्रोत्साहित करती हैं। इन कथाओं के द्वारा बच्चों को शिष्टाचार एवं सदाचार की भी शिक्षा मिलती है। हीरामन तोता नामक कहानी में अंकित और पुरु अपनी नानी से रोज एक कहानी सुनकर ही सोते थे। एक दिन नानी ने हीरामन तोता की कहानी सुनाई कि एक बहुत ही सुन्दर लड़की इरावती थी। उसे लोग सुन्दरी कहकर पुकारते थे। दूर–दूर तक उसकी सुन्दरता की चर्चा थी। एक सुन्दर लड़का था उसने हीरामन तोता पाला था। हीरामन तोतों की एक जाति होती है। यह प्रजाति झालावाड़ जिले के गागरोन गढ़ क्षेत्र में होती है। यह पहाड़ियों के छोर पर स्थित रहते है। इनके गले में लाल कंठी तथा सिर पर कलंगी तथा दोनों पंखों पर लाल रंग के गोल चकते होते है। मादा तोते के गले में कंठी नहीं होती। यह तोता मनुष्य की आवाज की हुबहू नकल कर सकता है। वह तोता एक दिन इरावती की सुन्दरता की प्रशंसा करने लगा। उसने इरावती के काले घने घुँघराले बालों का, उसके सोने जैसे रंग का, मृग जैसी बड़ी–बड़ी आँखे लाल पतले होंठो का तथा उसकी मीठी बोली के विषय में वर्णन करने लगा। यह सब सुनकर लड़के के मन में इरावती को देखने का इरादा कर वह चल दिया। उसे रास्ते में घना जंगल मिला, पहाड़ मिले,

नदी पार की तो कहीं झील में तैरना भी पड़ा। लेकिन वह इरावती के पास पहुँच ही गया। ''इरावती अपने घर के द्वारा पर खड़ी किसी की प्रतीक्षा कर रही थी। उसका गोरा रंग सूरज की ढ़लती रोशनी में लाल हो गया था तो उस लड़के को वह सोने की मूर्ति जैसी सुन्दर लगी। वह इसको देखकर अन्दर चली गई तो लड़के ने उसके माँ–बाप से पद्मावती के साथ उसके विवाह का आग्रह किया।''[17]

बच्चों को जीवन भर स्वस्थ–प्रसन्न रहे, इससे बढ़कर कोई और बात नहीं हो सकती, क्योंकि यदि बच्चे स्वस्थ रहेगें तो ही समाज एवं देश स्वस्थ रहेगा। इसलिए बच्चों के जीवन में योगासन के द्वारा उनका मन, शरीर व आत्मशांति हो सकती हैं। छोटी–छोटी जानकारियाँ बच्चों के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण हैं। विभा देवसेर एवं डॉ. विद्या श्रीवास्तव दोनों ने बच्चों को हर एक पशु पक्षी के बारे में विस्तृत जानकारी दी हैं। जिससे बच्चे इन पक्षी साहित्य को जाने व पहचानेगे क्योंकि बड़े–बड़े महानगरों एवं नगरों में रहने वाले इन पशु–पक्षियों से दूर होते जा रहे है। कदाचित ही कोई नवयुवक ऐसा मिलेगा जो दस बीस पक्षियों के नाम गिनाकर उनके विषय में कुछ जानकारी दे सके। पक्षी हमारे पर्यावरण को संतुलित रखने में बहुत सहायक होते है तथा उनसे जो आनंद मिलता है वह किसी ओर से नहीं। कहा जाता है कि पशु–पक्षी मानव के सच्चे मित्र होते है। वह कभी भी दोस्ती में धोखा नहीं देते है तथा नहीं किसी से कुछ कहते है। दोनों लेखिका ने इन पुस्तकों में सरल भाषा एवं रोचक शैली में पक्षियों के बारे में जानकारी दी है। जैसे –मोर, नीलकंठ, बगुला, बाज, कोयल, गिद्ध, मैना, कौआ, कबूतर, चील, तोता, सारस, बया, भीमराज, कठफोड़वा, गरूड, पपीहा, हरियल आदि है। नीलकंठ एक सुंदर और आकर्षक पक्षी है, जिसे भगवान शिव का प्रतीक माना गया है। दशहरे के दिन नीलकंठ के दर्शन शुभ माने गए हैं। इन धारणाओं में जितनी भी सत्यता हो, वह अपनी जगह है। नीलकंठ भारतवर्ष के अतिरिक्त अन्य देशों में भी पाया जाता है। इसकी अनेक जातियाँ होती हैं, जो आकार प्रकार, रंग रूप में एक दूसरे से भिन्न होती हैं।''[18]

निष्कर्ष–

समय कितना भी बदले बालसाहित्य की कथाओं का आकर्षण कभी कम नहीं होगा। छोटी–छोटी बातों से नया सीखने और जानने को बालक हमेशा उत्साहित रहता हैं। बच्चों को वर्तमान से जोड़कर उन्हें ऐसे संस्कार दे जिससे उसके पूरे चरित्र का समुचित विकास हो। आज बच्चों को ऐसे कथा साहित्य की जरूरत है, जो उन्हें कल्पना लोक की दुनिया से उतारकर यथार्थ की जमीन पर खड़ा कर सके। जो उन्हें उनके परिवेश से बाह्यजगत से, जीवन की आपाधापी और बच्चों की दुनिया के अंतरंग से परिचित करा सकें। ऐसे बालसाहित्य की जरूरत है जो बच्चों का सर्वांगीण विकास कर सकें।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है कि बालसाहित्य का सृजन करना बच्चों का खेल नहीं है। कथा, कहानी, नाटक इन सभी विधाओं में दृष्टि, संयम, सूझ–बूझ कल्पनाशीलता का एक ऐसा कथानक बुना है महिला बालसाहित्यकारों ने कि जिससे बच्चों को नैतिक शिक्षा व जीवन मूल्यों का महत्व समझ सकें और जीवन में आगे बढ़े। आज बच्चों के लिए ऐसे कथा साहित्य की आवश्यकता हैं, जो उन्हें कल्पना लोक की दुनिया से उतार कर यथार्थ की जमीन पर खड़ा कर सके। उनके परिवेश से बाह्यजगत् से जीवन की आपाधापी और बच्चों की दुनिया के अंतरंग से परिचित करा सके। इसीलिए महिला बालसाहित्यकारों ने बच्चों को नैतिक उपदेश देनेवाली कहानियों की दुनिया से बाहर आकर बच्चों को अपनी सच्ची दुनिया और उनके मनोभावों को प्राथमिकता देने का प्रयास भी किया हैं। अतः बालसाहित्य ने अब एक नया कलेवर धारण किया है और अपनी एक पृथक् पहचान भी बनायी है। आज बदलती हुई दुनिया के साथ महिला बालसाहित्यकारों के बालसाहित्य के रूप में भी परिवर्तन हुआ है। जिससे बच्चों को नया समाज नई संस्कृति एवं नया जीवन दर्शन देखने को मिला है।

संदर्भ

1. त्रिविधा, डॉ. मधुपंत, पृ. 27।
2. निर्मला भुराड़िया (नायिका, बुधवार, 21 सितंबर 2011) ने अपनी बात, पृ. सं. 8
3. बच्चों का व्यक्तित्व विकास कैसे हो, डॉ. शकुन्तला कालरा, पृ. सं. 37
4. गर्द के नीचे, आशा शैली, पृ. सं. 15
5. राष्ट्र को नमन, आशा जाकड़, पृ. सं. 41
6,7. अच्छे रास्ते जो स्वस्थ बनायेंगे भाग–1 अजिता श्रीवास्तव, पृ. सं. 4, 1
8,9. भाग–2 पृ. सं. 3, 8
10. ईमानदारी की कहानियां, भाग–3 चित्रा गर्ग, पृ. सं. 23
11,12,13.शिक्षा और संस्कार, मालती बसंत, पृ. सं. 23, 67, 87
14,15,16.नीलम राकेश, अनोखी छुट्टियाँ, पृ. सं. 14, 20, 30
17. दस प्रेरक बाल–कहानियाँ, डॉ. सरोजिनी कुलश्रेष्ठ, पृ. सं. 49
18. पक्षियों का संसार, डॉ. विद्या श्रीवास्तव, पृ. सं. 3

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-
413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com